॥ ओ३म् ॥

ईश्वर भक्ति के गीत



स्वर्गीय श्रीमती सुलखनी देवी

प्रकाशक

सुलखनी देवी महाजन धर्मार्थ ट्रस्ट

एम/१० लाजपत नगर नं० ३, नई दिल्ली-२४

भजन १

हाथ जोड़ विनती करूं सुनिये दीनदयाल।
तुम लग मेरी दौड़ है तुम ही हो रछपाल॥
आपकी भक्ति प्रेम से मन होवे भरपूर।
राग-द्वेष से चित्त मेरा कोसों भागे दूर॥
अति अनुग्रह कीजिये सेवक अपना जान।
अपनी भक्ति का मुझे शीघ्र कीजिए दान॥
हृदय में मेरे रात दिन, रहे प्रकाशित ज्ञान।
प्रभु भक्तों के बीच में मेरा होवे मान॥
कपट व दम्भ मेरे चित्त के कभी न आवे पास।
ध्यान आपका रात-दिन मन में करे तू वास॥
नित्य शुद्ध और बुद्ध हो जग के ही करतार।
नमस्कार है आप को मेरा बारम्बार॥
विनय करूं मैं आपसे, जोड़ के दोनों हाथ।
राखिये लाज कृपाल हो शरण आया हूँ नाथ॥
केवल पूर्ण ज्ञान का घर मन में हो जाय।
घट-घट व्यापक ब्रह्म की निशदिन रहे सहाय॥

भजन २

शरण में आये हैं हम तुम्हारी, दया करो दयालु भगवन्।
सम्भालो बिगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु भगवन॥
न हम में बल है न हम में शक्ति, न हम में साधन न हम में भक्ति।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी, दया करो हे दयालु भगवन॥

जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक,तुम हो पिता तो हम हैं बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी,दया करो हे दयालु भगवन ।।
सुना है हम अंश हैं तुम्हारे, तुम्हीं हो सच्चे प्रभु हमारे।
तो सुध हमारी है क्यों बिसारी, दया करो हे दयालु भगवन ।।
बुरे हैं जो हम तो हैं तुम्हारे, भले हैं जो हम तो हैं तुम्हारे।
तुम्हारे होकर के हम दुःखारी, दया करो हे दयालु भगवन ।।
प्रदान कर दो महान शक्ति, भरो हमारे में ज्ञान भक्ति।
तभी कहाओगे ताप हारो, दया करो हे दयालु भगवन ।।

भजन ३

है जिसने सारे विश्व को धारण किया हुआ,
वह है हर एक वस्तु के अन्दर रमा हुआ।
मिलता नहीं है इसलिये अज्ञानियों को वह,
अज्ञान का है बुद्धि पर परदा पड़ा हुआ।
दुनिया के दुःख रूप समुद्र से है वह पार,
जगदीश से है प्रेम भी जिन का लगा हुआ।
सच्ची खुशी से रहते हैं वे जन सदा अलग,
मन जिन का विषय भोग में होवे फंसा हुआ।
मन तो मलीन वैसा ही मूर्ख रहा तेरा,
गंगा में रोज जाके नहाया तो क्या हुआ।
खोते हैं खेल कूद में जो उमर रायगां,
अफ़सोस उनकी बुद्धि को न जाने क्या हुआ।

अज्ञानियों से रहता है 'केवल' वह दूर दूर,
खुल जावें ज्ञान चक्षु तो वह है मिला हुआ ॥

भजन ४

प्रभु के मिल के यश गावें, पिता वह ही हमारा है,
वही है पूज्य हम सबका, वही सबका सहारा है।
न महिमा उसकी का पाया, किसी ने वार पारा है,
सकल ब्रह्माण्ड को रच कर उसी ने एक धारा है।
जो कुछ हो चुका होगा, उसी का सब पसारा है,
सभी के बस रहा अन्तर, सभी से वह न्यारा है।
वह ज्योतिमय ही केवल है, नम्रता अन्धकारा है,
उसी के दान से सूरज चमकता चन्द्र तारा है।
वही है ज्ञान का सागर उसी में सत्य सारा है,
ज्ञानी सत्यवादी का वही मित्र प्यारा है।
पवित्र शुद्ध है निर्मल वह शुद्धि करने हारा है,
धर्म का बल इसी से है, वही बल का भण्डारा है।
वह करुणारूप है स्वामी, इसी से ही आधारा है,
अधर्म अति पापियों को भी भरोसा इस पै भारा है।
गंवाया जन्म को निष्फल, उसे जिसने विसारा है,
लगा चरणन में इसके जो, जन्म उसने संवारा है।
भुलावें क्यों भला उसको जो त्राता हम सभों का है,
भजो निशदिन उसे प्यारे कि जिसका यह पसारा हैं।

भजन ५

लगा दिल ईश से प्यारे अगर मुक्ति को पाना है।
वरना यास व हसरत के सिवा क्या हाथ आना है॥
यह दुनिया चन्द रोज़ा है यहां रहना नहीं दायम।
जवान हो, पीर हो तफ़लक, सभी ने छोड़ जाना है॥
करोड़ों हो गये योद्धा जो भारत के सितारे थे।
निशान उनका कहां बाकी, कहां उनका ठिकाना है॥
बहारे जिन्दगी पर किस लिये फूला फिरे नादान।
खज़ान को याद रख जिसने निशान तेरा मिटाना है॥

भजन ६

हमने ली है प्रभु इक तेरी शरण,
हे पिता और कोई सहारा नहीं।
पतित पावन प्रभु आसरा दो हमें,
आसरा और कोई हमारा नहीं।
न बुद्धि न भक्ति न विद्या का बल,
हृदय पर चढ़ा पाप कर्मों का मल।
बिन तुम्हारी दया के न सकते संभल,
तुमने किस-किसको स्वामी उभारा नहीं।
यह विनती है मेरी पिता मान लो,
हाथ आगे किसी के पसारा नहीं॥

भजन ७

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में।
है विनती पल-पल छिन्न-छिन्न, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥
संकट ने मुझको घेरा हो, चाहे चारों ओर अन्धेरा हो।
यह चित्त न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान……
चाहे वैरी सब संसार बने, मेरा जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान……
कांटों पै मुझको चलना हो, चाहे अग्नि में भी जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान……
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, यही काम मेरा सुबह शाम रहे।
बस ध्यान तेरा भगवान रहे, रहे ध्यान……

भजन ८

तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया,
वाणी से जाये वह क्यों कर बताया।
नहीं है यह वह रस जिसे रसना चाखे,
नहीं रूप उसका कभी दृष्टि आया।
नहीं हैं यह गुण गन्ध जो घरान जाने,
त्वचा से भी जाये न छुआ छवाया।
न संख्या में आना ही सम्भव है उसका,
दिशा काल में भी रहे न समाया।

है तुझसा दाता न तुझ सा दानी,
कि इतना बड़ा दान जिसने दिलाया।
आत्म-उन्नति मैं तुम्हारी दया से,
मेरी जिन्दगी ने अजब पलटा खाया।
सत्य चित्त आनन्द अनन्त स्वरूप,
मुझे मेरे अनुभव ने निश्चय कराया।
गूंगे की रसना के सदृश 'अमीचन्द,'
कैसे बताऊं कि क्या रस उड़ाया।

भजन ९

आज सब मिल गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद॥
मन्दिरों में कन्दरों में पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लगातार सौ सौ बार मुनिवर धन्यवाद॥
करते हैं जंगल में मंगल पक्षिगण हर शाख पर।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद॥
कूप में, तालाब में, सागर की गहरी धार में।
प्रेम रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद॥
शादियों में कीर्तनों में यज्ञ और उत्सव के आदि।
मीठे स्वर में चाहिये कर नारी-नर सब धन्यवाद॥
गान कर 'अमीचन्द' भजनान्द ईश्वर स्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता कान धर धर धन्यवाद॥

भजन १०

हे दयामय ! हर सभों को, शुद्धताई दीजिये।
दूर करके हर बुराई को, भलाई दीजिये ॥१॥
ऐसी कृपा और अनुग्रह, हम पै हो परमात्मा।
हों निवासी इस जगत के सब के सब धर्मात्मा ॥२॥
हो उजाला सबके मन में, ज्ञान के सुप्रकाश से।
और अन्धेरा दूर सारा हो, अविद्या नाश से ॥३॥
खोटे कर्मों से बचें, तेरे ही गुण गावें सभी।
छूट जावें दुःख सारे, सुख सदा पावें सभी ॥४॥
सारी विद्याओं को सीखें, ज्ञान से भरपूर हों।
शुभ कर्म में होवें तत्पर, दुष्ट गुण सब दूर हों ॥५॥
यज्ञ-हवन से हो सुगन्धित प्यारा भारतवर्ष देश।
वायु जल सुखदायी होवें जायें मिट सारे कलेश ॥६॥
वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी।
होवे आपस में प्रीति और बनें धर्मार्थी ॥७॥
लोभी और कामी क्रोधी, कोई भी हम में न हो।
दुष्ट व्यसनों से बच, और छोड़ देवे मोह को ॥८॥
अच्छी संगति में रहें, और वेद मार्ग पर चलें।
तेरे ही होव उपासक, और कुकर्मों से बचें ॥९॥
कीजिये हम सब का हृदय, शुद्ध अपने ज्ञान से।
मान भक्तों में बढ़ाओ, श्रद्धा भक्ति-दान से ॥१०॥

भजन ११

यज्ञरूप प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये ।
छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिये ॥१॥

वेद की बोले ऋचायें सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हो मग्न सारे शोक सागर से तरें ॥२॥

अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ के उपकार को ।
धर्म मर्यादा चला कर लाभ दें संसार को ॥३॥

नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें ।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें ॥४॥

कामना मिट जाय मन से पाप अत्याचार की ।
भावनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर नार की ॥५॥

लाभकारी हो हवन हर जीवधारी के लिये ।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये ॥६॥

स्वार्थभाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो ।
इदन्न मम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥७॥

हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहे ।
नाथ करुणारूप करुणा आपकी सब पर रहे ॥८॥

भजन १२

हे दयामय ! आपका हमको सदा आधार हो ।
आपके भक्तों से ही भरपूर यह परिवार हो ॥१॥

छोड़ देवें काम को, क्रोध को, मदमोह को ।
शुद्ध और निर्मल हमारा सर्वदा व्यवहार हो ॥२॥

प्रेम से मिल मिल के सारे गीत गावें आप के ।
दिल में बहता आप का ही प्रेम पारावार हो ॥३॥
जय पिता जय जय पिता, हम जय तुम्हारी गा रहे ।
रात दिन घर में हमारे, आपकी जयकार हो ॥४॥
धन धान्य घर में जो प्रभो! सब आपका ही है दिया ।
उसके हित प्रभु आपका धन्यवाद सौ सौ बार हो ॥५॥
पास अपने हो न धन, तो उसकी कुछ परवाह नही ।
आपकी भक्ति से ही धनवान यह परिवार हो ॥६॥

भजन १३

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में ॥
मेरा निश्चय है एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं ।
अर्पण कर दूं जगती भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ॥
या तो मैं जग से दूर रहूं, और जग में रहूं तो ऐसे रहूं ।
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में ॥
यदि मानुष ही मुझे जन्म मिले, तब-तब चरणों का पुजारी बनूं ।
मुझ पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे चरणों में ॥
जब-जब संसार का बन्दी बन, दरबार में तेरे आऊं मैं ।
हो मेरे पापों का निर्णय, सरकार तुम्हारे हाथों में ॥
मुझ में तुझ में है भेद यही, मैं नर हूं तू नारायण है ।
मैं हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ॥

भजन १४

मूर्ख मन क्यों करता अभिमान

काल बली जब आन दबावे, पल में लेवे प्राण।
धन दौलत और महल माड़ियां कुछ भी न अपना जान॥
यह सम्वन्धी और मित्र सब, सुख के हैं नादान।
विपत पड़े कोई काम न आवे मतलब के सब जान॥
जब तक जीवे प्रभु को भज ले होया क्यों अनजान।
यह जीवन और हुसन जवानी,ढल जाये बरफ समान॥
कोई दम के लिए आया जग में, सोया चादर तान।
खाली हाथ गये दुनियां से कारों से धनवान॥
पापी ज्योड़े दुष्ट कर्म त्यज, प्रभु की ओर कर ध्यान।
घर से पकड़ बिठाए बाहर, निकल जायें जब प्राण॥

भजन १५

नाम जपन क्यों छोड़ दिया

क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा, सत वचन क्यों छोड़ दिया।
झूठे जग में दिल ललचा कर, असल वतन क्यों छोड़ दिया॥
कौड़ी को तो खूब सम्भाला, लाल रत्न क्यों छोड़ दिया।
जिन सिमरन से अति सुख पावें,तिन सिमरन क्यों छोड़ दिया॥
खालस इस भगवान भरोसे, तन, मन, धन क्यों न छोड़ दिया॥

भजन १६

तुम हो प्रभु चांद मैं हूं चकोरा।
तुम हो कमल फूल मैं रस का भौंरा॥

ज्योति तुम्हारी का मैं हूं पतंगा,
आनन्द घन तुम हो मैं वन का मौरा ।
जैसे है चुम्बक की लोहे से प्रीति,
आकर्षण करे मोहे लगातार तोरा ।
पानी विना हों मीन व्याकुल,
ऐसे ही तड़पाये तुमरा बिछोड़ा ।
एक बून्द जल का मैं प्यासा हूं चातक,
अमृत की करो वर्षा हरो ताप मोरा ।।

भजन १७

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन, उसे कोई क्लेश लगा न रहा ।
जब ज्ञान की गंगा में नहाया, तो मन में मैल जरा न रहा ।।
परमात्मा को जब आत्मा में, लिया देख ज्ञान की आंखों से ।
प्रकाश हुआ मन में उसके, कोई उससे भेद छिपा न रहा ।।
पुरुषार्थ ही इस दुनियां में, सब कामना पूरी करता है ।
मन चाहा फल उसने पाया, जो आलसी बनके पड़ा न रहा ।।
दुखदायी हैं सब शत्रु हैं यह विषय हैं जितने दुनियां के ।
वह पार हुआ भवसागर से, जो जाल में इनके फंसा न रहा ।।
यहां वेद विरुद्ध जब मत फैले, प्रकृति की पूजा जारी हुई ।
जब वेद की विद्या लुप्त हुई, फिर ज्ञान का पांव जमा न रहा ।।
यहां बड़े-बड़े महाराज हुए, बलवान हुए विद्वान् हुए ।
पर मौत के पंजे से केवल, कोई दुनियां में आके बचा न रहा ।।

भजन १८

प्रेमी भर कर प्रेम में ईश्वर के गुण गाया कर।
मन मन्दिर में गाफला झाड़ू रोज़ लगाया कर॥ प्रेमी॥
सोने में तो रात गंवाई दिन भर करता काम रहा।
इसी तरह बरबाद तू बन्दे करता अपना आप रहा।
प्रातःकाल उठ प्रेम से सत्संगति में जाया कर॥ प्रेमी॥
दुखिया पास पड़ा है तेरे तूने मौज उड़ाई तो क्या।
भूखा प्यासा पड़ा पड़ौसी तूने रोटी खाई तो क्या।
सबसे पहले पूछ कर भोजन को तू खाया कर॥ प्रेमी॥
नर तन के चोले का पाना बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का होता जब तक मेल नहीं।
नर तन पाने के लिये उत्तम कर्म कमाया कर॥ प्रेमी॥
देखो दया जगदीश्वर की वेदों का जिस ज्ञान दिया।
सोच समझ ले अपने मन में कितना है कल्याण किया।
सब कर्मों को छोड़ प्रभु को ही तू ध्याया कर॥ प्रेमी॥

भजन १९

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और आधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो॥
सब भांति सदा सुखदायक हो, दुःख दुर्गुण नाशक हारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो॥
भूली हैं हम ही तुमको तुम तो, हमारी सुधि नाहिं बिसारे हो॥

उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो ।
महाराज महा महिमा तुम्हरी, समुझे बिरले बुधवारे हो ।।
शुभ शान्ति निकेतन प्रेम निधे, मन मन्दिर के उजियारे हो ।
वही जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो ।।
तुम सो प्रभु पाय 'प्रताप' हरि, केहि के अब और सहारे हो ।।

भजन २०

शरण प्रभु की आओ रे ! यही समय है प्यारे ।
आओ प्रभु गुण गाओ रे ! यही समय है प्यारे ।
उदय हुआ ओ३म् नाम का भानु, आओ दर्शन पाओ रे ।।१।।
अमृत झरना झरता इससे, पीकर अमर हो जाओ रे ।।२।।
छल कपट और द्वेष को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ रे ।।३।।
हरि की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे ।।४।।
कर लो नाम प्रभु का सुमिरन, अन्त को ना पछताओ रे ।।५।।
छोटे-बड़े सब मिल के खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे ।।६।।

भजन २१

शरण अपनी में रख लीजे, दयामय दास हूँ तेरा ।
तुझे तजकर कहां जाऊं, हितु को और है मेरा ।।
भटकता हूं मैं मुद्दत से, नहीं विश्राम पाता हूं ।
दया की दृष्टि से देखो, नहीं तो डूबता बेड़ा ।।
सताया राग द्वेषों का, तपाया तीन तापों का ।
दुखाया जन्म मृत्यु का, हुआ तंग हाल है मेरा ।।

दुःखों को मेटने वाला, तुम्हारा नाम सुनकर मैं।
शरण में आ गिरा अब तो, भरोसा नाथ है तेरा ॥
क्षमा अपराध कर मेरे, फ़कत अब आश है तेरी।
दया 'बलदेव' पर करके, बना ले नाथ निज चेरा ॥

भजन २२

जय जय पिता परम आनन्द दाता।
जगदादिकारण मुक्तिप्रदाता ॥१॥
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे।
सृष्टि का स्रष्टा तू धर्ता संहाता ॥२॥
सूक्ष्म से सूक्ष्म, तू है स्थूल इतना।
कि जिसमें यह ब्रह्मांड सारा समाता ॥३॥
मैं लालित व पालित हूं पितृ स्नेह का।
यह प्राकृत सम्बन्ध है तुझसे ताता ॥४॥
करो शुद्ध निर्मल मेरी आत्मा को।
करूं मैं विनय नित्य सायं व प्रातः ॥५॥
मिटाओ मेरे भय को आवागमन के।
फिरूं ना जन्म पाता और बिलबिलाता॥६॥
बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धु।
कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता ॥७॥
'अमी' रस पिलाओ कृपा करके मुझको।
सर्वदा रहूं तेरी कीर्ति को गाता ॥८॥

भजन २३

आरती

ओ३म् जय जगदीश हरे, पिता जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट, क्षण में दूर करे ॥१॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का ॥२॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी ॥३॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तरयामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥४॥
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता।
दीन दयालु कृपालु, कृपा करो भर्त्ता ॥५॥
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राण पति।
किस विध मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमती ॥६॥
दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम रक्षक मेरे।
करुणा हस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे ॥७॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥८॥